[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 1338 **D** आपका अनुक्रमांक .....

Unique Paper Code : 205503

Name of the Course : **B.A. (Hons.) HINDI**

Name of the Paper : Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhayein

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(खंड क)

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (7+8=15)

(क) किसी देश या जाति में सबके सभी लोग असाधारण बुद्धि बल संपन्न नहीं होते फिर साधारण जनसमूह भेड़ियाधसान के अतिरिक्त और क्या कर सकता है ? अथवा यों कहना उचित है कि भेड़ चाल ग्रहण किये बिना साधारण लोगों का निर्वाह कैसे हो सकता है ? नयी रोशनी के आरम्भ में यह धूम मची थी और आज तक शांत नहीं हुई कि हिन्दुस्तान में भेड़ियाधसान है, यहाँ के लोग पुरानी लकीर पर फकीर हैं, कैसा ही कष्ट और हानि हो पर पुराने ढर्रे को छोड़ना नहीं चाहते ! देश का दुर्भाग्य है कि इस प्रकार के आक्षेपों ने बहुतेरों के चित्त पर प्रभाव कर लिया नहीं तो हमारा पुराना रास्ता जिस पर हमारे पिता पितामहादि चलते आये हैं, किसी भांति बुरा न था न है न हो सकता है, क्योंकि उसके बतलाने वाले हमारे महर्षिगण थे, जिनकी विद्या बुद्धि लोकहितैषिता बहुदर्शिता सूक्ष्मदर्शिता दूरदर्शिता अद्यापि निष्पक्ष विचारशील मनुष्य मात्र की श्रद्धा का आधार है।

अथवा

जो समझता है कि वह दूसरों का अपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरा उसका अपकार कर रहा है, वह भी बुद्धिहीन है। कौन किसका उपकार करता है, कौन किसका अपकार कर रहा है ? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है; नहीं मिल सका, कोई बात नहीं; परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है तो दुःख पहुँचाने का अभिमान तो नितांत गलत है। दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वही है जिसका मन वश में है, दुखी वह है जिसका मन परवश है।

(ख) भक्तिन अच्छी है यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती पर 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। मेरे इधर-उधर

P.T.O.

पड़े पैसे-रुपये, भंडार घर की किसी मटकी में कैसे अन्तर्हित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर इस सम्बन्ध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए ऐसी चुनौती दे डालती है जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए भी संभव नहीं। यह उसका अपना घर ठहरा - पैसा रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा संभाल कर रख लिया। यह क्या चोरी है ? उसके जीवन का परम कर्तव्य मुझे प्रसन्न रखना है - जिस बात से मुझे क्रोध आ सकता है उसे कुछ बदल कर इधर-उधर करके बताना क्या झूठ है ? इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो वे भगवान जी को कैसे प्रसन्न रख सकते और संसार को कैसे चला सकते।

अथवा

महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को कुछ चीज भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे के अफसर पहनते हैं। रेलगाड़ी के डब्बे-के-डब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया ?

2. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये : (15×3=45)

(क) 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' नामक निबंध के केंद्रीय विचार का विश्लेषण कीजिए।

(ख) 'कुटज' निबंध के आधार पर हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'करुणा' निबंध की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।

(घ) ''अदम्य जीवन' नामक पाठ में अकाल पीड़ित मानवता की पीड़ा को सशक्त रूप में वर्णित किया गया है' - कथन की समीक्षा कीजिए।

(ङ) 'भोलाराम का जीव' वर्तमान व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करता है'- कथन का विवेचन कीजिए।

(खंड ख)

3. (क) डॉ. राजेंद्र प्रसाद की आत्मकथा के आधार पर उनका हिंदी-प्रेम सम्बन्धी दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

आत्मकथा के तत्त्वों की दृष्टि से डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा का मूल्याँकन कीजिए।

(ख) 'जूठन' दलित जीवन का दस्तावेज़ है' कथन की समीक्षा कीजिए। (5)

अथवा

हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा के आधार पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए।

अथवा

'अपनी खबर' के आधार पर पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालिए।